दृष्टि The Vision

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

(मॉड्यूल II- मध्यकालीन इतिहास)

DTVF/17–OPS-H2

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Sakshi Garg

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.):

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

नोटः प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश अंतिम पृष्ठ पर संलग्न है।

Evaluation Analysis

TP-26

Introduction	B+
Context	B+
Language	C
Content	B+
MARKS	85/250
Conclusion	B
Structure	B
Current Link / Examples	-B

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

व्यापक विश्लेषण / Macro Analysis

- सभी प्रश्नों को हल करने का प्रयास करें

- मानचित्र संबंधी प्रश्नों पर विशेष ध्यान दें ये आपको अधिक अंक दिलवाने में काफी सहायक हो सकते हैं।

- आपके लेखन का दृष्टिकोण सराहनीय है। निरन्तर प्रयासों से इसे और समृद्ध बनाते रहिये।

-

Grade Card	
Grade 'A'	Very Good
✓ Grade 'B'	Good
Grade 'C'	Satisfactory
Grade 'D'	Poor

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

खण्ड - A / SECTION - A

1. आपको दिये गए मानचित्र (प्रश्न पत्र के पृष्ठ नं. 4) पर अंकित निम्न स्थानों की पहचान कीजिये और अपनी प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में उनमें से प्रत्येक पर लगभग 30 शब्दों की संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये। मानचित्र पर अंकित प्रत्येक स्थान के लिये स्थान-निर्धारण संकेत क्रमानुसार दिये गए हैं। $2\frac{1}{2} \times 20 = 50$

Identify the following places marked on the map supplied to you (On question paper's page no. 4) and write a short note of about 30 words on each of them in your Question-cum-Answer Booklet. Locational hints for each of the places marked on the map are given below seriatim:

(i) एक राजधानी

A Capital city

(ii) एक युद्ध स्थल

A Battlefield

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(iii) एक दुर्ग

A Fort

0

(iv) एक बंदरगाह

A Seaport

1½

लोथल → गुजरात में स्थित महत्वपूर्ण बंदरगाह

- यहां से फारस की खाड़ी होते हुए पश्चिम एशिया व मध्य एशिया को व्यापार होता था।

- यहां से प्राप्त सिक्के व्यापारिक सम्पन्नता को प्रदर्शित करते हैं।

- मुख्यतः घोड़े, कीमती धातु, मोती आदि का आयात व कृषि उत्पाद, नील, कपास आदि का निर्यात होता।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(v) एक व्यापारिक केंद

A Trading Center

कांचीपुरम् → पूर्वी तट पर स्थित महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र

- यहां से भारी मात्रा में सिक्के प्राप्त हुए हैं साथ ही प्राप्त साक्ष्यों से पुष्टि होती है कि दक्षिण पूर्व एशिया से व्यापार होता था
- यह प्रमुख शिक्षा केन्द्र भी है
- संगम साहित्य में भी इसका उल्लेख मिलता है।

(vi) एक राजधानी

A Capital city

अश्मक (पाटन) → दक्षिण भारत में स्थित एकमात्र महाजनपद की राजधानी पाटन

- यह स्थल जन से जनपद व जनपद से महाजनपद के रूप में परिवर्तित अर्थव्यवस्था को प्रदर्शित करता है
- बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय, महावस्तु में भी हम 16 महाजनपदों का वर्णन पाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(vii) एक धार्मिक स्थल

A Religious Site

हैलेबिड -> चालुक्य शासकों द्वारा यहां अनेक मंदिर बनवाए गए

- सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैलेबिड का चेन्नाकेशव मंदिर है।

- यहां के मंदिर बेसर शैली को सम्बोधित करते हैं। कई मंदिर तारे की शक्ल में निर्मित हैं।

(viii) एक ऐतिहासिक नगर

A Historical city

1½

हस्तिनापुर -> महाजनपदकालीन प्रमुख नगर

- यह स्थल जनपद से परिवर्तित इकाई महाजनपद को संबोधित करता है।

- व्यापार-वाणिज्य, संस्कृति का प्रमुख केन्द्र रहा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ix) एक धार्मिक नगरी

A Religious city

- बिहार में स्थित धार्मिक नगरी

-

0

(x) एक राजनीतिक-धार्मिक नगरी

A Political-Religious city

[illegible] → उत्तरप्रदेश में स्थित

- कई शासकों द्वारा अपनी राजधानी बनायी गयी

- राजनीति के साथ-साथ यह स्थल धर्म का भी प्रमुख केन्द्र रहा।

0

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(xi) एक नव पाषाणकालीन स्थल

A Neolithic Site

मेहरगढ़ → वर्तमान पाकिस्तान में स्थित

- यहां से प्राप्त मनके, मृदभाण्ड नवपाषाणकालीन शिल्पकला, धार्मिक संस्कार के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।

1½

- नवपाषाणकालीन लोग पशुपालन के साथ-साथ कृषि की भी शुरुआत कर चुके थे।

(xii) एक हड़प्पाकालीन स्थल

A Harappan site

1½

सुरकोतडा → गुजरात में स्थित हड़प्पाकालीन स्थल

- सुरकोतडा से घोड़े के सतही साक्ष्य पाए गए हैं जिससे यह प्रतीत होता है, यहां के लोग घोड़े को जानते तो थे पर व्यापक पैमाने पर प्रयोग नही करते थे।

- हड़प्पाकालीन नगरीय संस्कृति का यह स्थल प्रतिनिधित्व करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1 1/2

(xiii) एक मध्यकालीन नगर

A Medieval city

आगरा → मध्यकालीन महत्वपूर्ण राजनीतिक नगर
- कई मुगल शासकों ने इसे अपनी राजधानी बनाया।
- व्यापार-वाणिज्य की समृद्धता का प्रतीक है।
- यहां स्थित ताजमहल ने अपनी खूबसूरती के लिए विश्व विरासत स्थल में शामिल किया गया है।

(xiv) एक ऐतिहासिक नगर

A Historical city

- उत्तर प्रदेश में स्थित प्रमुख नगर
- यह राजनीतिक केन्द्र रहा, इसके साथ ही विभिन्न शासकों, अमीर वर्गों की उपस्थिति के कारण विलासितापूर्ण वस्तुओं का बड़ा उपभोक्ता नगर था।

0

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(xv) एक व्यापारिक केंद्र

A Trading Center

अवंति -> मध्यप्रदेश में स्थित व्यापारिक केन्द्र

- यह नगर मनका, मोती आदि के व्यापार हेतु प्रसिद्ध था

- इस स्थल का जुड़ाव स्थलमार्ग से गुजरात स्थित बंदरगाहों से था।

- इस नगर में बड़े स्तर पर व्यापारिक केंद्रों का विकास हुआ।

(xvi) एक शैलकृत गुहा स्थल

A rock-cut cave site

1/2

भीमबेटका > मध्यप्रदेश में स्थित

- यह प्याले के आकार की गुहाएं प्राप्त हुयी हैं।

- इन गुफाओं पर हुयी चित्रकारी को सम्भवतः सर्वाधिक प्राचीन चित्रकला के साक्ष्य माना जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(xvii) एक शिक्षा केंद्र

An Educational center

1½

~~तक्षशिला~~ →

तक्षशिला → उत्तरी पाकिस्तान में स्थित

- प्राचीन काल में प्रमुख व्यापारिक, राजनीतिक व शैक्षिक स्थल के रूप में प्रसिद्ध था।

- इस शिक्षा केन्द्र की ख्याति मात्र भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में थी, चीन, ईरान अनेकों देश से विद्यार्थी पढ़ने आते थे।

(xviii) एक मध्यकालीन सामरिक केंद्र

A Medieval Strategic Center

काबुल → वर्तमान अफगानिस्तान में स्थित

- यह महत्वपूर्ण स्थान ही था जिसके माध्यम से भारत का जुड़ाव मध्य एशियाई देशों से हुआ

- इसके माध्यम से बड़े स्तर पर विदेशों से व्यापारिक संपर्क स्थापित किया गया था।

(सैन्य)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(xix) एक राजधानी

A Capital City

कर्णसुवर्ण > पश्चिमबंगाल में स्थित स्थल

- यह वही स्थल है जहां से राजा शशांक ने बोधिवृक्ष को कटवाकर नदी में फेंकवा दिया था।

0

(xx) एक मध्यकालीन युद्ध स्थल

A Medieval battlefield

2½

तालीकोटा > दक्षिणभारत का प्रमुख व विख्यात स्थल।

- यहीं पर विजयनगर साम्राज्य का युद्ध अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा, बहमनी से हुआ

- इसे बन्नीकोटा का युद्ध / राक्षसतांगड़ी का युद्ध भी कहते हैं।

- यहां पर इस युद्ध के बाद विजयनगर साम्राज्य का अन्त हो गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

2. (a) "टाड द्वारा राजपूतों की विदेशी उत्पत्ति का मत कल्पना पर अधिक आधारित प्रतीत होता है।" राजपूतों की भारतीय उत्पत्ति के मत के संदर्भ में उक्त कथन की विवेचना कीजिये। 15

"The theory of foreign origin of the Rajputs by Todd seems based on imagination". Discuss the statement with reference to the Indian origin theory of Rajputs. 15

Ans → राजपूतों की उत्पत्ति के सन्दर्भ में इतिहासकारों के बीच मतैक्यता का अभाव रहा है। टाड द्वारा इस संदर्भ में विदेशी कारणों से उत्पत्ति को समर्थन दिया गया। इनका मानना था विदेशी आक्रमणों से भारतीय क्षेत्रीय शासकों में अपने संरक्षण के प्रयास की शुरुआत हुयी और इसी सन्दर्भ में उन्होंने अपनी राजनैतिक, सैन्य, आर्थिक स्थिति मजबूत की गयी और ये शासक राजपूत कहलाए।

वस्तुतः भारतीय उत्पत्ति को समर्थन देने वाले इतिहासकारों का मानना है कि यह एक दीर्घकालीन प्रक्रिया थी, जिसका उदय दीर्घकालीन सामाजिक आर्थिक, क्षेत्रीय परिस्थिति के कारण हुआ ना कि तात्कालिक। वस्तुतः उपरोक्त दोनो मतों का विश्लेषण निम्न आधारों में किया जा सकता है—

- राजपूतों के पास बड़े स्तर पर भू-भाग थे, और

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संभवत: ये भूभाग इन्हें सामंती व्यवस्था के रूप में प्राप्त हुए थे, अतः इसे हम गुप्त काल से चली आ रही भू दान प्रक्रिया के चरम रूप में देख सकते हैं।

- कृषि अधिशेष, व्यापार-वाणिज्य से इन्होंने अपनी सैन्य शक्ति को विस्तृत व मजबूत किया व एक क्षेत्रीय शासक की संज्ञा ले ली।

इस प्रकार टॉड की संकल्पना, कल्पना मात्र प्रतीत होती है, उत्पत्ति हेतु भारतीय परिस्थितियां ही ज्यादा तार्किक प्रतीत होती हैं।

मिश्रित / भारतीय + विदेशी

टाड द्वारा विदेशी उत्पत्ति के संदर्भ में दिये गए मत (सीथियन जाति को संतान) का परीक्षण कीजिए। इस मत का खण्डन करते हुए भारतीय उत्पत्ति संबंधी मत का विश्लेषण कीजिए अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सीथियन जाति से समानता का आधार
सीथियन जाति से समानता का आधार
- रहन सहन तथा वेश-भूषा में समानता
- माँसाहार का प्रचलन
- रथों द्वारा युद्ध करना
- यन्त्रों का प्रचलन

भारतीय विद्वानों जैसे डी.एच ओझा एवं सी.वी वैद्य द्वारा इनका खंडन किया गया

2 1/2

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	.25	1.5	.5	.25	–		
Grade	B	C	d	C	–		

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) "आठवीं शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी के मध्य उड़ीसा में प्रचलित मंदिर स्थापत्य नागर शैली का अधिक निखरा रूप था।" सोदाहरण स्पष्ट कीजिये। 15

"The temple architecture prevalent in Odhisa between 8th to 13th century was more prominent form of Nagara style." Elaborate with examples. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Ans मंदिर कला की तीन शैलियां प्रचलित थी - नागर, बेसर व द्रविड़। हिमालय से विन्ध्यन घाटी तक फैली शैली को नागर कहा गया, वस्तुतः इस शैली का चरम व उत्कृष्ट स्वरूप उड़ीसा के मंदिरों में देखा गया

उड़ीसा में बने मंदिरों की विशेषताओं को निम्न बिंदुओं के तहत देख सकते हैं—

- यहां अतिभव्य शिखर बनाए गए, ये रेखीय शिखर अपनी विशालता, उत्कृष्ट नक्काशी व सुन्दरता हेतु प्रसिद्ध हैं।

- उड़ीसा के लिंगराज मंदिर की चर्चा विदेशों तक में है। भुवनेश्वर में ~~केसरी शासक द्वारा~~ केसरी शासक द्वारा बनवाया गया मंदिर नागर शैली की उत्कृष्टता को प्रदर्शित करता है।

इस मंदिर का विशाल पंचायतन, रेखीय शिखर, देउल, जगमण्डप, आमलक अति विशेष नक्काशी से उकेरे गए हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- उड़ीसा में स्थापित कोर्णाक का सूर्य मंदिर यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में स्थान रखता है। इस मंदिर में 12 पहिये, वर्ष के महीनो को प्रतिबिम्बित करते हैं, साथ ही 7 घोड़े ऊषा के आगमन को दिखाते हैं।

- उड़ीसा में बना कलिंग का मंदिर भी नागर शैली हेतु विख्यात है व इसकी भव्यता हेतु प्रसिद्ध है।

इस प्रकार कहा जा सकता है उड़ीसा के मंदिर प्राचीन स्थापत्य नागर शैली की उत्कृष्टता को प्रदर्शित करते हैं।

4½

प्रारंभिक नागर शैली के मंदिरों से तुलना भी करें।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

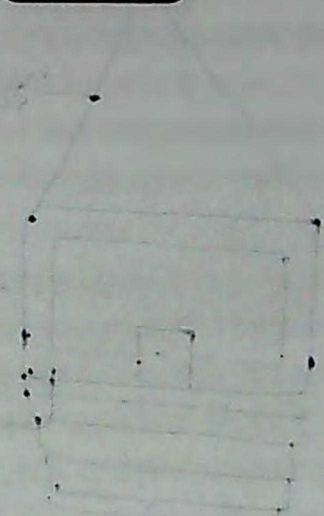

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	1.25	2.5	1.5	.25	-	-.25	
Grade	B	B	C	C		B	

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) "तुर्कों के समक्ष भारतीयों की पराजय के मुख्य कारण जाति-भेद और आडम्बरपूर्ण बंधन थे, जिसने सामाजिक और राजनितिक एकता की भावना को पूर्णतया नष्ट कर दिया था।" कथन की विवेचना कीजिये। 20

"The main reason for the defeat of Indians before the Turks were caste discrimination and pretintious shackle that completely destroyed the feeling of social and political unity." Discuss the statement. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Ans तुर्कों के समक्ष भारतीय पराजय इतिहासकारों के बीच चर्चा-परिचर्चा का सदैव मुख्य विषय रहा है। वस्तुतः इसके लिए सामाजिक, धार्मिक कारणों को महत्वपूर्ण माना जाता है।

यदि जातिभेद के आधार पर विश्लेषण करें तो राजपूत अपने जाति, वंश, कुल की शान के लिए जीते थे, जिसके कारण उनमें क्षेत्रीय भावना प्रबल थी व राजनीतिक एकता कुण्ठित हो गयी थी।

यही कारण है कि जब मुहम्मद गौरी ने रायपिथौरा पृथ्वी राज चौहान पर आक्रमण किया तो जयचंद ने मदद नहीं की व कालान्तर में जयचंद पर हमला होने पर वह हार गया।

राजपूत यज्ञ, हवन, कर्मकाण्ड पर विश्वास करते थे, उसके आधार पर शक्तिशाली

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

होने का दावा करते थे। कर्मकाण्डों के कारण समाज में पर्याप्त विभेदमूलक व्यवस्था का जन्म हो चुका था, समाज भी असहिष्णु, असंतोष की भावना से ग्रसित हो रहा था,

वहीं दूसरी ओर तुर्कों को लेनपूल ने ठंडे प्रदेश के मांसाहारी कहा है। ये ताकत के बल पर जीते थे, साथ ही इनके समाज सेना में भारत की तरह भेदभाव नहीं था।

यद्यपि जातिभेद व आडम्बरपूर्ण होने के अलावा भी अन्य कारक थे जिन्होंने ने भारतीयों की पराजय निश्चित कर दी। युद्ध के लिए परंपरागत अस्त्रों का प्रयोग, युद्ध की पवित्रता पर बल आदि ने राजपूतों को कमजोर किया वहीं दूसरी ओर तुर्क घोड़े की नाल, रकाब, धारदार ~~सीधी~~ नक्काशदार तलवार का प्रयोग करते थे व किसी भी कीमत पर युद्ध जीतने पर भरोसा रखते थे।

इस प्रकार अनेक सामाजिक,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सभी राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सैन्य कारक थे जिससे भारतीय पराजित हुए।

जातिभेद और आडम्बरपूर्ण बंधन के कारण निम्न वर्ग का श्रम को सहयोग न प्राप्त होना

सराहनीय

8

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	.25	4	3	.25	-	.25	
Grade	C	B+	B	B		B	

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (a) क्या आप यह मानते हैं कि बलबन का राजत्व नैतिक सिद्धांतों से संचालित होने के साथ-साथ उसकी शासकीय अभिव्यक्ति को भी दर्शाता है? 20

Do you think that the kinship of Balban governed by ethical principals and also it was a manifestation of his rule? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Ans > बलबन का राजत्व सिद्धान्त मध्यकाल की विलक्षणता थी, जिसने संपूर्ण मध्यकाल को नई दशा व दिशा दी।

वस्तुतः इस सिद्धान्त के मूल का विश्लेषण तात्कालिक परिस्थितियों, सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में जानेंगे-

- बलबन के समय सल्तनत असुरक्षित थी, मंगोल के आक्रमण का खतरा, चहलगानी का षड्यंत्र व मेयो राजपूत के आक्रमण का खतरा बना हुआ था।

- निम्न कुल से संबंधित होने के कारण उसे स्वयं की औचित्यता सिद्ध करनी थी।

इसी आधार पर 'रक्त व लौह' की नीति पर आधारित राजत्व का सिद्धान्त लाया गया -

- बलबन ने स्वयं को अफराशियाब वंश का वंशज बताया व प्रशासन में वंश व रक्त के आधार पर नियुक्ति

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की।

- दरबार में सिजदा व पैबोस जैसी प्रथा शुरु की।

- बड़े स्तर पर सैन्य व्यवस्था का गठन किया, इसके लिए दीवान-ए-आरिज नामक विभाग बनाया।

- इक्तेदारों की शक्ति पर लगाम लगाने हेतु 'ख्वाजा' नामक अधिकारी की नियुक्ति की।

- प्रजा के बीच मदिरा पान पर प्रतिबंध लगाया व गुप्तचरी प्रणाली शुरु की, ताकि कोई ~~विद्रोह न कर~~ षड्यन्त्र न कर सके। इसे 'बलबन के कान' की संज्ञा दी।

- तुर्क-ए-चहलगानी के सदस्यों को मरवा दिया क्योंकि बलबन चहलगानी की ताकत को भलीभांति जानता था व अपनी सत्ता हेतु बड़ा खतरा मानता था।

- मंगोलों के प्रति सुरक्षात्मक के बजाए आक्रमक नीति अपनायी व खुले आम प्रतिशोध किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वस्तुतः उपरोक्त सिद्धांतों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि एक ओर बलबन अपने साम्राज्य को रक्त व लौह की नीति के आधार पर नैतिक रूप दे रहा था, वहीं दूसरी ओर इसमें तत्कालीन परिस्थितियों का हल निहित था।

उत्तर को प्रश्न की मांग के अनुसार प्रस्तुत करने का प्रयास करें।
बताए कि बलबन का राजत्व नैतिकता के आवरण में उसकी शासकीय अभिव्यक्ति को समेटे हुए था।

8

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	.25	3	4	.25	–	.45	
Grade	B	B	B+	C		B	

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) "विजयों और शत्रु को मित्र बनाने की नीति का पालन करने में अलाउद्दीन खिलजी की तुलना अकबर से की जा सकती है।" विवेचना कीजिये। 15

"Alauddin Khilji can be compared to Akbar in the victories and adhering the policy of making friends to the enemy." Discuss. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Ans अलाउद्दीन खिलजी को मध्यकाल का अनोखा शासक करार दिया जाता है, राजनीतिक क्रियाकलापों में तो कुछ इतिहासकार इसे अकबर का पूर्वगामी करार देते हैं।

अलाउद्दीन खिलजी की राजनैतिक नीतियों का विश्लेषण -

- मंगोल नीति आक्रामक रखी। अलाउद्दीन ने मंगोलों के साथ दूत वार्ता प्रारम्भ की, जिससे युद्ध नीति कमजोर पड़ रही थी।

- यदि दक्षिण भारत की नीति पर विचार करें तो देवगिरी व वारंगल से हेयसल दोनों अभियानों में विजय प्राप्त की परन्तु उन्हें अपने अधीन नहीं किया, मात्र राजकोषीय सहायता प्राप्त की और इसी आर्थिक सुदृढ़ता से सुदूर दक्षिण तक अपनी विजय स्थापित की अर्थात् मछली के तेल में ही मछली को भून दिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इसी प्रकार गुजरात, मालवा, रणथम्भौर अभियानों में उसने कूटनीतिज्ञता का परिचय दिया।

दूसरी ओर अकबर की नीति देखें तो राजपूतों को (मित्र बनाकर) अकबर ने सबसे बड़े सैन्य बाजार राजपूताना में प्रवेश किया। और आमेर, चित्तौड़ राजपूतों की सहायता से कश्मीर से खानदेश, बरार, पश्चिम से काबुल तक मुगल साम्राज्य स्थापित किया।

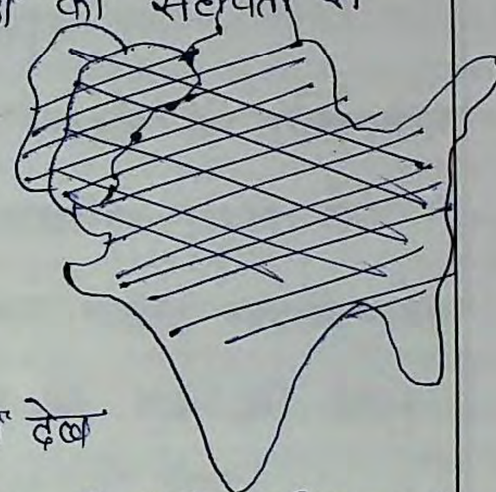

इस प्रकार हम देख सकते हैं, अकबर व अलाउद्दीन की नीति काफी हद तक साम्यता प्रदर्शित करती हैं।

बतायें कि अलाउद्दीन जितनी अधिराजत्व में विश्वास करता था जबकि अकबर प्रभुसत्ता में।

5

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	.25	2	2	.25	.	—.25	
Grade	C	B	B	C		B	

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(c) मुहम्मद बिन तुगलक की दक्षिण भारतीय राज्यों के प्रति अपनाई गई नीति अलाउद्दीन खिलजी की नीति से किस रूप में भिन्न थी? उसके दक्षिण भारतीय अभियानों के परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट करें। 15

How the policy of Muhammad bin Tughlaq towards South Indian states was different from the policy of Alauddin Khilji? Explain in the perspective of his expedition to South India. 15

Ans → दक्षिण भारत ने सदैव भारतीय शासकों के उत्थान व पतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। मध्यकाल भी इसका अपवाद नही रहा।

अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण भारत के प्रति समुद्रगुप्त की ग्रहणमोक्ष-अनुग्रह की नीति का पालन किया था, जिसमें दक्षिणी राज्यों पर विजय प्राप्त की परन्तु उन्हें कभी भी अपने साम्राज्य के अन्तर्गत स्थापित नही किया।

अलाउद्दीन ने दक्षिणी राज्यों से भारी मात्रा में धन लूटा और इसी धन का प्रयोग अपने साम्राज्य विस्तार व सुदृढीकरण में किया। प्रजा की सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति बाजार नियंत्रण, दाग व हुलिया आधारित उच्चस्तरीय सैन्य व्यवस्था की।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वहीं दूसरी ओर मोहम्मद बिन तुगलक ने दक्षिणी राज्यों पर प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित करने की कोशिश की। अपनी राजधानी भी दौलताबाद स्थापित की।

परन्तु क्योंकि संचार व्यवस्था का अभाव, निम्न स्तरीय प्रशासनिक व्यवस्था, ~~केन्द्रीकृत~~ शासन प्रणाली के कारण वह दक्षिणी राज्यों पर कुशल नियंत्रण न रख सका और विद्रोहों का सामना करना पड़ा, इसी समय विजयनगर, बहमनी जैसे राज्य उदित हुए।

इस प्रकार जहां एक ओर अलाउद्दीन की दक्षिणी नीति ने उसे सुदृढ़ता प्रदान की तो दूसरी ओर मोहम्मद बिन तुगलक की नीति ने उसे उसी बर्बाद कर दिया जिस प्रकार स्पेन के नासूर ने नेपोलियन को तबाह किया था।

6 1/2
प्रशंसनीय

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	.25	3	2	.25		.5	
Grade	B	A	B	A		A	

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - B / SECTION - B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 150 शब्दों में दीजिये: $10 \times 5 = 50$

Answer each of the following question in about 150 words:

(a) पूर्व-मध्यकालीन भूमि अर्थव्यवस्था की विशेषताओं पर संक्षिप्त टिप्पणी करें।

Briefly comment on the characteristics of land economy of early medieval period.

Ans> पूर्व मध्यकाल प्राचीन व मध्यकाल के बीच की संक्रमण अवस्था को संबोधित करता है। इस काल में राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक सभी क्षेत्रों में परिवर्तन देखे गए जिसका प्रभाव भूमि अर्थव्यवस्था पर भी पड़ा।

सराहनीय

पूर्व मध्यकाल (600 ईसवीं - 800 ईसवीं) में सामन्तवादी व्यवस्था काफी तेजी से बढ़ रही थी वस्तुतः राजा द्वारा भूमि पर कृषि क्षेत्र बढ़ाने तथा अपनी समाज में पकड़ बनाने के उद्देश्य से ब्राह्मणों ~~सामन्तों~~ को भूमि दान कर रहे थे।

इस व्यवस्था से एक तरफ तो कृषि क्षेत्र में काफी बढ़ोतरी हुयी, बंजर भूमि को भी कृषि योग्य बनाया जाने लगा। सामन्तों द्वारा आरंभिक अवस्था में कृषि को बहुत प्रोत्साहन दिया गया। इसका वर्णन ह्वेनसांग के यात्रा विवरण में भी प्राप्त

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होता है, बाणभट्ट द्वारा भी कृषि उर्वरता का उल्लेख किया गया है।

परन्तु यह प्रक्रिया सतत नही रही। कालान्तर में सामन्त विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करने लगे। उन्होंने कृषि संवर्धन हेतु प्रयास नही किया अपितु ज्यादा से ज्यादा कर लगाकर कृषकों का शोषण किया। इस कारण किसान रुष्ट होकर कृषि छोड़ने लगे। कुछ कृषक दास बनने पर मजबूर हो गए।

कृषकों का सामन्ती शोषण निरन्तरता व परिवर्तनीयता के साथ हम आज आधुनिक भारत में भी देख सकते हैं, जिसकी नींव पूर्व मध्यकाल में ही पड़ गयी थी।

इस प्रकार पूर्व मध्यकाल में कृषि व्यवस्था सम्पन्नता से दीनता की ओर अग्रसित हो गयी।

सराहनीय प्रयास

5

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link/ Examples	Conclusion	Error
Marks	.5	2	1.5	.5	–	.25	
Grade	A	A	B	B	–	C	

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) पूर्व-मध्य काल में संस्कृत भाषा-साहित्य के विकास को इसमें व्याप्त दोषों के साथ दर्शाइए।
Bring out the development of Sanskrit literature in early medieval period with flaws in it.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सराहनीय

Ans → पूर्व मध्यकाल में संस्कृत भाषा साहित्य का वह वटवृक्ष खड़ा हुआ जिसने न सिर्फ तात्कालिक अपितु आगे संपूर्ण मध्यकाल तक अपनी छाया व सुगंध प्रदान की।

इस काल में नाटक, काव्य, महाकाव्य, ललितकाव्य, गणितशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, खगोलशास्त्र, चिकित्साशास्त्र में ग्रंथ लिखे गए। जिसका उल्लेख इस प्रकार है –

- महाकाव्य लेख में ~~राघवविजय~~ रामायण, राममंजरि, हर्षमंजरी लिखी गयी
- ललितकाव्य में जयदेव का गीतगोविन्द प्रसिद्ध रहा।
- संस्कृत संगीत साहित्य में सारंगकृतदेव, हरिकृपा-सरितसागर प्रमुख रहे।
- संस्कृत भाषा साहित्य का विकास उत्तर भारत के साथ-साथ दक्षिण भारत तक रहा।
- दक्षिण भारत में तमिल, कन्नड़, तेलुगु आदि में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अनेक रचनाएं की गयीं । इनमें केवल द्वारा तमिल में रामायण, पंपा, पोन्ना का आदिपुराण, शांतिपुराण प्रमुख रहा।

यद्यपि इस भाषा-साहित्य विकास में कुछ दोष भी प्रतीत होता है, ज्यादातर साहित्य धर्म को प्रदर्शित करते हैं, साथ ही इनमें प्रयुक्त भाषा उच्च वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है।

उपरोक्त कमियों के बावजूद पूर्वमध्यकाल में संस्कृत भाषा साहित्य का विकास अनोखी विशेषता रही।

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link/ Examples	Conclusion	Error
Marks	2.5	2	1.5	.5	-	.25	
Grade	A	A	B	B	-	C	

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) इल्बरी वंश के पतन में तुर्क-ए-चहलगानी की भूमिका की विवेचना कीजिये।

Discuss the role of Turkan-i-chahalgani in the fall of the Ilbary Dynasty.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भूमिका सराहनीय है

इल्तुतमिश द्वारा 40 गुलाम सरदारों को संगठित कर तुर्क-ए-चहलगानी की स्थापना की। यह व्यवस्था इल्बरी वंश के लिए दोधारी तलवारी साबित हुयी, जिसने एक ओर इल्बरी वंश स्थापना, सुदृढ़ता को आधार प्रदान किया तो दूसरी ओर स्वयं इसके पतन का कारण बन गयी।

इल्तुतमिश के समय तुर्क-ए-चहलगानी नियंत्रित थी, परन्तु इल्तुतमिश की मृत्यु होते ही इनकी महत्वाकांक्षा बढ़ गयी, ये पुत्र रुकुद्दीनफिरोज को शासक बनाना चाहते थे, जबकि इल्तुतमिश ने अपनी योग्य वीर पुत्री रजिया को उत्तराधिकारी नियुक्त किया था।

रजिया ने चहलगानी पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास किया, तो वहीं दूसरी ओर चहलगानी ने रजिया के खिलाफ षड्यन्त्र रचा और रजिया जैसी योग्य शासिका की मृत्यु करा दी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अब दिल्ली सल्तनत की गद्दी पर अपना कठपुतली शासक बैठाया और वास्तविक अधिकार स्वयं ले लिया, जिस कारण अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गयी।

इसी तुर्क-ए-चहलगानी के एक सदस्य के रूप में बलबन था, जिसने शासक बनते ही, सर्वप्रथम चहलगानी का अन्त किया, जो इसकी गंभीरता को प्रदर्शित करती है।

इस प्रकार तुर्क-ए-चहलगानी इल्बरी वंश के पतन का महत्वपूर्ण कारण सिद्ध हुयी।

2

नयाबीप

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	.5	2	1.5	.5	–	.5	
Grade	A	A	B	B	–	A	

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(d) "कबीर और नानक उसी धारा के संत थे जो बुद्ध के कमंडल से बही थी।" विवेचना कीजिये।
"Kabir and Nanak were the saints of the same stream which came out from Ewer of Buddha." Discuss.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Ans -> इतिहास साक्षी है, जब कभी समाज में अराजकता, असहिष्णुता, उग्रता, असंतोष उत्पन्न होता है तो उसे शांत करने हेतु, एक दिशा देने हेतु कोई संत आगे आता है। इसी के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण थे प्राचीन भारत में महात्मा बुद्ध व मध्यकाल में कबीर व गुरुनानक।

निराशाजनक

महात्मा बुद्ध ने तत्कालीन हिंसा, कर्मकाण्ड रूढ़िवादिता, जाति-वर्ण भेदभाव पर प्रहार करते हुए अहिंसा का मार्ग प्रदर्शित किया, और धर्म से भी आगे बढ़ एक आचार संहिता प्रस्तुत की, जिसके अनुसार मानव सेवा, त्याग-बलिदान-प्रेम से व्यक्ति मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

आगे कबीर ने इसी धारा को आगे बढ़ाया, मूर्तिपूजा कर्मकाण्ड का उपहास उड़ाया और कहा - ईश्वर एक है और उसका नाम है मानवता

कर्मकाण्डों का विरोध

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

लौकिक जीवन पर विश्वास करने को कहा।

गुरुनानक सिक्ख सम्प्रदाय के अग्रदूत रहे। गुरु नानक जी के उपदेश भी मूर्तिपूजा, कर्मकाण्ड, भेदभाव का विरोध करते थे और समाज में समानता, संतोष, सहिष्णुता, प्रेम, अहिंसा, समन्वय के पक्षधर थे।

वस्तुतः महात्मा बुद्ध द्वारा लगाए गए नैतिकता के पौधे को कबीर और नानक जैसे संतो ने पानी, खाद डालकर अपने चरम पर पहुंचा दिया जिसके फल आज वर्तमान में आधुनिक समाज को भी प्राप्त हो रहे।

गुरुद्वारा में की जा रही मानव सेवा, लंगर व्यवस्था इसी का उदाहरण है।

प्रशंसनीय

5

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	.5	2	1.5	.25	-.25	.5	
Grade	A	A	B	C	B	A	

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(e) विजयनगर युग में कृषिजन्य अर्थव्यवस्था में हुए परिवर्तन तथा विकास की संक्षिप्त चर्चा करें।
Briefly discuss the changes and development of the agricultural economy in the Vijayanagara era.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उत्तर दक्षिण भारत के इतिहास की चर्चा विजयनगर युग के वर्णन के बिना अधूरी है। इस काल में शासकों ने अपने प्रतिबद्धता से राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक के साथ-साथ कृति अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन किए।

वस्तुतः इस काल में नाड प्रशासन की सबसे छोटी इकाई होती है थी, जिसमें 12 अधिकारियों की नियुक्ति होती थी, जिसे आयगार व्यवस्था कहा गया। आयगार के माध्यम से कृषि प्रशासन का कार्य भलीभांति किया गया।

राजा द्वारा बड़े पैमाने पर सिंचाई व्यवस्था की गयी। नहर, तालाब, कुएं छादवार बाए। सिंचाई कर लगाया गया। कृषकों को अग्रिम ऋण दिया गया और तार्किक कर व्यवस्था का निर्धारण किया गया।

तुंगभद्रा नदी के दोआब में स्थित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

होने के कारण अतिउपजाऊ भूमि व्यवस्था थी। कहा गया - "विजयनगर में जितनी भूमि पर एक हाथी बैठता था, वह भूमि 7 लोगों के राशन की पूर्ति कर सकती थी।"

इस प्रकार शासक सहयोग, सुव्यवस्थित प्रशासन, एवं भौगोलिक क्षेत्र के कारण कृषिगत अर्थव्यवस्था अपने चरम पर थी और विजयनगर को और सुदृढ़ बनाने में सहयोग प्रदान कर रही थी।

4

विजयनगर काल में कृषिजन्य अर्थव्यवस्था में परिवर्तन —

- भू-धारण पद्धति में व्यापक परिवर्तन - चोल युग का नाडु घटकर ग्राम के रूप में अब एक छोटी इकाई मात्र रह गया
- ग्रामीण भागों में तेलुगु और बाहरी लोगों को भू-स्वामित्व
- कृषि अर्थव्यवस्था के विकास में मंदिरों की भूमिका में वृद्धि
- बड़े भू-स्वामी, ब्राह्मण, तथा मंदिरों द्वारा स्वयं खेती न करके छोटे किसानों को इसे पट्टे पर देना।

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	.25	1.5	1.5	.25	-	.5	
Grade	B	B	B	C	-	B	

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) क्या आप मानते हैं कि अकबर द्वारा विकसित मनसबदारी प्रथा एक प्रकार की वैयक्तिकृत नौकरशाही थी? स्पष्ट करें तथा इसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालें। 20

Do you agree that the Mansabdari system developed by Akbar was a kind of personalized bureaucracy? Explain and throw light on its characteristics. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Ans अकबर के समय एक विशिष्ट प्रकार की प्रशासनिक व्यवस्था शुरू की गयी 'मनसबदारी' जिसका अर्थ है पदों का आवंटन।

मनसबदारी प्रथा क्या थी संक्षेप में बताएं।

इस व्यवस्था की विशेषताएं इस प्रकार हैं -

- मनसबदारी में पदों के अनुक्रम का निर्धारण जात के आधार पर होता था। इसके अन्तर्गत प्रथम श्रेणी के जात, द्वितीय श्रेणी, तृतीय श्रेणी व निम्न श्रेणी के जात आते थे। जात के आधार पर पदों का नामकरण निम्न प्रकार था -

① मनसबदार — 10-500 जात
② अमीर — 500 जात से 2500 जात
③ अमीर-ए उम्दा (आबुर) - 2500 से 5000 जात
④ खान-ए खाना 5000 जात

सवार पद के आधार पर तीन श्रेणियां
प्रथम - जात एवं सवार बराबर 5000/5000
द्वितीय - सवार जात से कुछ कम 5000/3000
तृतीय - जात से आधा से कम सवार 5000/2000

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- कालान्तर में इस व्यवस्था में सवार व व्यवस्था जोड़ी गयी, जिसमें घोड़ो व सैनिको की आवश्यकता के आधार पर सवार प्रदान किए जाते थे, जिनकी संख्या जात से कम होती थी, इसके कई प्रकार थे - एक अस्पा
दो अस्पा
सिंह अस्पा

- मुगलकाल की मनसबदारी व्यवस्था ने मुगलप्रशासन के सुदृढ़ीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, वस्तुतः इसने विभिन्न प्रकार की सैन्य व्यवस्था की। और विकेन्द्रीकृत शासन प्रणाली के आधार पर मजबूत केन्द्रीकृत शासन प्रणाली को स्थापित किया।

अकबर द्वारा शुरू की गयी यह व्यवस्था वैयक्तिक व्यवस्था का प्रतिबिम्ब करती है, जहां प्रशासन में व्यक्ति विशेष के आधार पर पदों का आवंटन किया गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसकी कुशलता को देखते हुए ही आगे के शासकों ने निरन्तरता व परिवर्तनीयता के क्रम में इसको जारी रखा।

7

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	.25	3	3	.25	—	.25	
Grade	C	B	B	C		C	

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) क्या आपके विचार में शाहजहाँ, नूरजहाँ के समर्थन और पृष्ठपेषण का मोहताज था या अपने आँप को सिद्ध करने की क्षमता उसमें स्वमेव विद्यमान थी? विवेचना कीजिये। 15

Do you think Shahjahan was dependent on the support and backing of Noorjahan or ability to prove himself already existed in him? Discuss. 15

Ans→ नूरजहां का गुट व उसका प्रभाव सदैव से इतिहासकारों के बीच मतभेद का विषय रहा है। नूरजहां की शाहजहां के उत्थान में क्या भूमिका थी इसे विभिन्न इतिहासकारों के लेखन के आधार पर विश्लेषित करना होगा -

- बेनी प्रसाद का मानना था जहांगीर पर नूरजहां का बहुत प्रभाव था, वास्तविकता में सभी निर्णय वही लेती थी।

- पापरलिस्त ने सिक्कों को आधार बनाते हुए बेनी प्रसाद के वर्णन का समर्थन किया है।

- इन्होंने यह माना कि नूरजहां के समर्थन व इच्छा के कारण ही शाहजहां को ख्याति प्राप्त हो सकी यह वास्तविकता में शाहजहां की काबिलियत नहीं थी।

कुछ उदाहरण दें। जहाँ शाहजहाँ का समर्थन किया गया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दूसरी ओर जहांगीर ने आत्मकथा तुजुके जहांगीरी में लिखा है, 'मेरा स्वास्थ्य खराब होने के पूर्व तक मैं अपने सभी निर्णय स्वयं करता था।' नुरुल हसन ने इस तथ्य का समर्थन किया है।

-वस्तुतः शाहजहां ने अपने वीरता के बल पर दक्कन व मालवा अभियान में विजय प्राप्त की, जिसके आधार पर उसे जहांगीर के बगल में स्थान प्राप्त हुआ। इसके साथ ही 30,000 जात व 30,000 सवार की मनसबदारी प्राप्त हुयी।

आगे जब शाहजहां को गद्दी प्राप्त हुयी तो उसने अपनी पराक्रमता के बल पर अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा व उत्तर पश्चिमी सीमावर्ती प्रांत में काबुल तक को मुगल साम्राज्य के अधीन कर दिया।

अतः यह शाहजहां की क्षमता व गुणवत्ता थी जो उसे इतनी ख्याति प्राप्त हुयी न कि नूरजहां का समर्थन।

6

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wr anything in this

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	.5	3	2	.25		.25	
Grade	A	A	B	BC		B	

Feedback

Questions ....

Model Answer & Answer Structure ....

Evaluation ....

Staff ....

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में
लिखें।
: don't write
ng in this space)

रफ कार्य के लिये स्थान

(Space for Rough Work)

Copyright – Drishti The Vision Foundation